विज्ञप्ति

हे प्रभो! यह तेरापंथ

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 25 : अंक 7 : नई दिल्ली : 10-16 मई 2019

मंत्री मुनि, शासन स्तम्भ मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) का प्रयाण

जयपुर में विराजमान मंत्री मुनि, शासन स्तम्भ मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) का अक्षयतृतीया तदनुसार ७ मई २०१९ को मध्याह्न करीब १२.१५ बजे प्रयाण हो गया। अपने दीक्षा प्रदाता मुनिश्री के प्रयाण के संदर्भ में परमपूज्य आचार्यप्रवर ने मंगल संदेश प्रदान किया, वह इस प्रकार है--

अर्हम्

आज अक्षयतृतीया के समारोह की सम्पन्नता के बाद संवाद मिला कि श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री देवलोक हो गए हैं। श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) हमारे धर्मसंघ के एक वरिष्ठ और विशिष्टतम संत थे। वे मंत्री मुनि के स्थान और शासन स्तम्भ के अलंकरण को प्राप्त करने वाले संत थे। वे चार पुरुषों को दीक्षा प्रदान करने वाले हमारे धर्मसंघ के वर्तमान के अद्वितीय मुनिप्रवर थे। उन चार में एक मैं भी हूं।

मैं अभी ईरोड़ में स्थित हूं। मेरे पास साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, साध्वीवर्या आदि साध्वियां तथा मुख्यमुनि महावीर आदि संत साध्वीप्रमुखाजी के ठिकाणे में उपस्थित हैं। धर्मसंघ ने मानों कि एक मंत्रीमुनि को खो दिया और वह स्थान आज रिक्त हो गया।

मेरे सहदीक्षित मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी को लंबेकाल तक मुनिश्री की सेवा में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ और वर्तमान में मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी का सिंघाड़ा श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री के उपपात में रहने का अवसर प्राप्त कर रहा था। मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी एक प्रबुद्ध और समझदार संत हैं। मंत्री मुनिश्री का अभाव उनके मन को उद्विग्न करने का निमित्त तो बन सकता है, परन्तु उदित मुनिश्री खूब मनोबल रखेंगे और मुनि अनन्तकुमार, मुनि ज्योतिर्मयकुमार आदि सभी संत खूब समाधिस्थ रहें।

श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री के द्वारा दीक्षित व शिक्षित मैं आचार्य महाश्रमण उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और संपूर्ण धर्मसंघ को यह सूचना भी दे रहा हूं कि श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री का आज मध्याह्न में जयपुर, राजस्थान में प्रयाण हो गया है। यथासंभव दिनांक ७,८,९ मई को त्रिदिवसीय आध्यात्मिक अनुष्ठान का उपक्रम चलाया जाए। उसमें नमस्कार महामंत्र आदि का जप, आध्यात्मिक गीतों का संगान, मुनिश्री की स्मृति सभा आदि के आयोजन किए जा सकते हैं। यथानुकूलता तप के प्रयोग भी किए जा सकते हैं। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के द्वारा दीक्षित, परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के शासनकाल में अपने ढंग से काम करने वाले श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) के प्रति मैं मंगल भावांजलि अर्पित करता हूं।

ईरोड़, तमिलनाडु **आचार्य महाश्रमण**

आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार गुरुकुलवास में भी ७, ८ व ९ मई को जप, तप आदि अनुष्ठान तथा स्मृति सभा का क्रम चला, विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें, आगामी विज्ञप्ति में।

दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ का दशम महाप्रयाण दिवस

३० अप्रेल। वैशाख कृष्णा एकादशी। तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का दशम महाप्रयाण दिवस। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण ने प्रातः तेन्निलई से रसमपालयम की ओर प्रस्थान किया। आचार्यप्रवर ने परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी की स्मृति में चौविहार प्रहर (पौरुषी) की। आज के विहार का प्रारंभिक पथ कच्चे रूप में था। वाहनों के आवागमन से इस पथ पर धूल का गुबार उठ रहा था। अपनी सूखी अवस्था, तीव्र गर्मी, बबूल, आम व थोर वनस्पति की पैदाइश और पेयजल की कमी के कारण यह क्षेत्र राजस्थान की याद दिलाता-सा प्रतीत हो रहा था। मार्ग में मध्यवर्ती गांवों थोपनपट्टी आदि में यत्र-तत्र खड़े ग्राम्यजनों ने करबद्ध होकर तथा 'वन्दे गुरुवरम्' का उच्च स्वर में उच्चारण कर पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान डिंडिगुल जिला से ईरोड़ जिला में प्रवेश किया। नोयल्ल नदी पर बना पुल पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। ईरोड़ जिला में प्रवेश के कुछ ही समय बाद आसपास का दृश्य बदला हुआ-सा दिखाई देने लगा। आसपास में छाई हुई हरितिमा डिंडिगुल जिला और ईरोड़ जिला के अन्तर को दर्शा रही थी। राजियम पालियम के लोगों ने भी पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशिष प्राप्त की। पूज्यप्रवर लगभग ११ कि.मी. का विहार कर रसमपालयम में स्थित श्री सेल्वन हरिसुदन रामासामी परिवार के निवास स्थान पर पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण से उल्लसित परिजनों ने पूज्यप्रवर को नमन कर सादर स्वागत किया।

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दसवें महाप्रयाण दिवस के संदर्भ में समायोजित हुआ। कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'आज वैशाख कृष्णा एकादशी का दिन है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का दसवां महाप्रयाण दिवस है। आचार्य महाप्रज्ञजी अपने युग के विलक्षण व्यक्तित्व थे। व्यक्तित्व के निर्माण में भाग्य और पुरुषार्थ दोनों का योग होता है। आचार्य महाप्रज्ञजी के भाग्य और पुरुषार्थ दोनों का योग फलवान बना और उनका व्यक्तित्व विशिष्ट बन गया। साधना के क्षेत्र में, बौद्धिकता के क्षेत्र में, दार्शनिकता के क्षेत्र में उन्होंने अपनी नई पहचान बनाई। गुरुदेव तुलसी के प्रति उनका अनन्य समर्पण था और आचार्य महाश्रमणजी के प्रति उनका गहरा विश्वास था।'

साध्वीवर्याजी ने कहा--'जैन साधना की ओर प्रस्थित होने पर अनन्त की यात्रा की जाती है। अनन्त का अर्थ है-अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र और अनन्त आनन्द की यात्रा। आचार्य महाप्रज्ञजी के ये चारों ही अनुत्तर थे। उन्होंने अपने जीवन में निश्चिंतता का जीवन जीया। उनका बचपन से ही चारित्र और ज्ञान से लगाव था तथा उनका श्रद्धा और समर्पण भी विलक्षण था। उनका ज्ञान आमाप्य था। वे शास्त्रवेत्ता और तत्त्ववेत्ता थे। आचार्य तुलसी ने उन्हें शास्त्रों का गहन अध्ययन करने के लिए अवसर भी प्रदान किया। उन्होंने अपनी जागृत प्रज्ञा से प्रेक्षाध्यान का उद्भव और आगम संपादन आदि अनेक विशिष्ट कार्य किए। उनका तीसरा नेत्र खुला हुआ था, इसीलिए वे अज्ञ से महाप्रज्ञ बन गए।

मुख्यमुनिश्री ने कहा--'आचार्य महाप्रज्ञजी ने 'तिण्णाणं तारयाणं' का सूक्त चरितार्थ कर स्वयं साधना कर उस साधना का अमृत सबको बांटा। उन्होंने स्वयं को साधकर जैनयोग की साधना को पुनरुज्जीवित कर प्रेक्षाध्यान का आविष्कार किया। वे ज्ञान के साथ प्रायोगिक प्रशिक्षण को महत्त्व दिया करते थे। संघ में साधना का अमृत बांटकर उन्होंने संन्यास को तेजस्वी बनाया।'

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज वैशाख कृष्णा एकादशी है। परम श्रद्धेय परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का दसवां महाप्रयाण दिवस है। आज के दिन आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का महाप्रयाण हुआ था। उन्हें दो आचार्य (आचार्यश्री कालूगणी तथा आचार्यश्री तुलसी) का साया, सान्निध्य प्राप्त हुआ। वे लंबे काल तक आचार्य तुलसी के शिष्य और सहयोगी बनकर रहे। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ की सर्वोच्च सत्ता की

उपलब्धि के पीछे उनकी साधना, ज्ञानाराधना तथा विनयपूर्ण आचरण आदि अनेक तत्त्वों का योग था। उनके पास वैदुष्य का भी बल था। उन्हें संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, राजस्थानी, प्राकृत आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान था। जैन आगमों के अतिरिक्त अनेक विषयों का ज्ञान भी उनको था। उन्हें बहुश्रुत व्यक्तित्व के रूप में देखा जा सकता है। ज्ञान के साथ उनकी प्रवचन शैली भी विशिष्ट थी। उनकी भाषा स्पष्ट थी तथा कंठ में माधुर्य था। उनका संगान भी मधुरतापूर्ण था। उनके शब्दरूपी शरीर में जो ज्ञान आत्मा थी वह समर्थ व सशक्त थी। वे ग्रंथ की बात को अपनी प्रज्ञा, प्रतिभा या तार्किकता की कसौटी पर कसकर प्रस्तुत करते थे।

मुझे उनके चरणों में निकटता से बैठने का अवसर मिला। यह मेरा सौभाग्य है कि ऐसे महान व्यक्तित्व के चरणों में रहकर कुछ पाने का मौका मिला। उनका वात्सल्य, कृपा, अनुग्रह तथा करुणा मुझे प्राप्त हुई।'

मुनि रजनीशकुमारजी और मुनि मननकुमारजी ने भी आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री आर. सेल्वम ने अपने घर में प्रवास करने हेतु पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्त किया। सुश्री प्रियदर्शनी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से रसमपालयम गांव में अलोकिक वातावरण छाया हुआ था। आज प्रायः दिनभर ग्रामीण दर्शनार्थियों के आने का तांता लगा रहा। हिन्दी भाषा से प्रायः अनभिज्ञ तमिल लोग आचार्यप्रवर की मुख मुद्रा को देखकर और पावन आशीर्वाद प्राप्त कर तृप्ति और प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे थे। जब-जब उन्हें तमिल भाषा में आचार्यप्रवर के त्याग-तपोमय जीवन के विषय में अवगति दी जा रही थी, आचार्यप्रवर के प्रति उनके श्रद्धाभाव और भी पुष्ट बन रहे थे।

मोडाक्कुरिचि के पूर्व विधायक श्री आर.एम. पलनीस्वामी किसी कार्यवश अपने मूल गांव रसमपालयम में आए और उन्होंने पूज्यप्रवर के आसपास खड़ी ग्रामीणों की भीड़ को देखकर उसका कारण जानना चाहा तो ग्रामवासियों ने उन्हें आचार्यप्रवर के विषय में जानकारी दी। वे पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। पूज्यप्रवर ने उन्हें साधुचर्या, अहिंसा यात्रा आदि के विषय में जानकारी प्रदान की। वे बोले--'मैं आज माता-पिता से मिलने गांव में आया था। गांव में आयोजन का माहौल देखकर मैंने मेरे चचेरे भाई (जिसके घर पर आचार्यप्रवर विराजमान थे।) से पूछा, तब उसने सारी जानकारी दी। हमारा सौभाग्य है कि आपका हमारे घर में पदार्पण हुआ है। वास्तव में अहिंसा यात्रा आज के युग की जरुरत है। स्वामीजी! आप बहुत महान कार्य कर रहे हैं।'

सायंकाल करीब ४.४४ बजे आचार्यप्रवर रसमपालयम से नागपालयम की ओर प्रस्थित हुए। श्री सेल्वन हरिसुदन रामासामी आदि पारिवारिकजनों ने पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अपने कृतज्ञभाव अर्पित कर मंगल आशिष प्राप्त की। विश्व हिन्दू परिषद् की ईरोड़ जिला शाखा के अध्यक्ष श्री राजमाणिकम ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। विहार के दौरान परिपार्श्वस्थ खेतों में दिखाई दे रहे मोर जैन विश्व भारती को स्मृति में ला रहे थे। ईख, आम, नारियल की खेती के साथ-साथ आज तिल ओर बाजरी की खेती भी दिखाई दे रही थी। स्थान-स्थान पर पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। लगभग ५.७ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर नागपालयम में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेंड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

स्कूली किताबों में पढे श्रमण धर्म को आंखों से निहारा

१ मई। परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः नागपालयम से वेलोट्टयपरप्पु की ओर प्रस्थित हुए। नागपालयम में स्थान-स्थान पर खड़े ग्रामीण दर्शनार्थियों पर आचार्यप्रवर ने आशिषवृष्टि की। कई लोग पूज्यप्रवर की मनहारी छवि को अपने-अपने मोबाइल के कैमरों में संजोने में लीन थे। ईरोड़ जिला में हल्दी की खेती प्रचुरतया होती है। मार्ग के परिपार्श्व में यत्र-तत्र सुखाई हुई हल्दी की महक राहगीरों का ध्यान उस ओर आकृष्ट कर रही थी। करोरापालियम के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। ईरोड़

के सुन्दरकाण्ड भक्त मंडल के सदस्यों ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीष प्राप्त की। करीब १२.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर वेलोट्टयपरप्पु में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेंड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। पेरेटेन्टल टीचर एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री पी.टी.ए. पेरेस्वामी आदि लोगों ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में दो तत्त्व हैं आत्मा और शरीर। ये दोनों घुले-मिले हुए हैं। शरीर में आत्मा है, परन्तु शरीर और आत्मा एक नहीं है। शरीर को अलग बताया गया है और आत्मा को अलग। जैसे स्वर्ण मिट्टी से मिला हुआ होने पर भी स्वर्ण का अस्तित्व अलग होता है और मिट्टी का अस्तित्व अलग होता है, वैसे ही शरीर और आत्मा का अलग-अलग अस्तित्व है।

आत्मा स्थायी है। शरीर अस्थायी है। आदमी अस्थायी (शरीर) पर तो ध्यान देता है, परन्तु स्थायी (आत्मा) के लिए क्या-क्या करता है, यह चिन्तनीय विषय है। मैं आत्मा हूं, शरीर नहीं हूं। इस आत्मा का आगे भी कल्याण हो, इसका भी हमें ध्यान देना चाहिए। आत्मा भौतिक चीजों को आगे साथ में नहीं ले जाती, वह अकेली जाती है। भौतिक पदार्थ यहीं रह जाते हैं। जिस तरह कमल पानी में रहते हुए भी अलिप्त रहता है, उसी तरह गृहस्थ को गार्हस्थ्य में रहते हुए भी अलिप्त रहने का अभ्यास करना चाहिए। सांसारिक कार्य भी करने पड़ें तो उनमें यथासंभव अनासक्ति रहनी चाहिए और उम्र आने पर उनसे निवृत्ति का प्रयास भी करना चाहिए।

आदमी भले करोड़ों का मालिक हो, कर्मों का फल तो उसे भी भोगना पड़ता है। कर्म के सामने कितनी भी रिश्वत ऑफर कर दी जाए, वह किसी के प्रलोभन में आकर काम नहीं करता। यदि व्यक्ति ने बुरे कर्मों का उपार्जन किया है तो उसे अशुभ परिणाम ही भुगतने पड़ते हैं। पाप को माफ करने के लिए धन की जरुरत नहीं है, साधना और तपस्या करने की अपेक्षा है। तपस्या से कर्मों की निर्जरा होती है। निर्जरा होने से कर्मों में हल्कापन आ सकता है और आत्मा शुद्ध हो सकती है।

यह औदारिक शरीर स्थूल है। उसके भीतर में सूक्ष्म और सूक्ष्मतर क्रमशः तैजस और कार्मण शरीर हैं। कार्मण शरीर हमारे आगे की गति का निर्णय करता है। इस स्थूल शरीर से तो मृत्यु के साथ छुटकारा मिल जाता है, किन्तु कार्मण शरीर मृत्यु के बाद भी साथ नहीं छोड़ता है। यह तो मोक्ष में जाने के समय ही छूटता है। साधना का मूल लक्ष्य होता है कार्मण शरीर से छुटकारा पाना। पूर्णतः छुटकारा नहीं हो सके तो कार्मण शरीर को कृश कर देना। कार्मण शरीर के कृशीकरण की साधना अध्यात्म की साधना है। हम शरीर और आत्मा के पार्थक्य को जानकर आत्मा की निर्मलता को बढ़ाने का प्रयास करें, यह काम्य है।'

गवर्नमेंट स्कूल के प्रेसिडेंट एम. पेरेस्वामी ने कहा-'भगवान महावीर की परंपरा के शिष्यों की साधना बहुत कठिन होती है। जो हम स्कूल की किताबों में श्रमण धर्म के बारे में पढ़ते थे, उसका साक्षात् दृश्य आज हमें देखने को मिल रहा है। हमें गर्व है कि हमारे विद्या संस्थान में आचार्यश्री पधारे हैं और हमें अहिंसा यात्रा में सहभागी बनने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।'

सायंकाल करीब ५.३० बजे पूज्यप्रवर ने वेलोट्टयपरप्पु से कुडुमुडीपालयम की ओर प्रस्थान किया। पेरेन्टल टीचर एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री पी.टी.ए. पेरेस्वामी ने पूज्यप्रवर को वंदन कर श्रीचरणों में कृतज्ञभाव अर्पित किए। वेलीट्टयपरप्पु के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ स्थान-स्थान पर खड़े थे। आचार्यप्रवर निकट पधारे तो उन लोगों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। इसी प्रकार मालयमपालयम के निवासीजन भी पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में यत्र-तत्र बड़ी संख्या में खड़े थे। उन्होंने पूज्यप्रवर को करबद्ध नमन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। लगभग २.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर कुडुमुडीपालयम में स्थित कोन्गु कल्याण मण्डपम में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

सहिष्णुता का विकास करें

२ मई। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः कुडुमुडीपालयम से गेटपुदुर की ओर प्रस्थित हुए। विहार के दौरान कुडुमुडीपालयम, सोलंगापालयम तथा गणपतिपालयम के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। चवादिवालयम में स्थित गौशाला से संबंधित लोगों के निवेदन पर आचार्यप्रवर मार्ग से कुछ भीतर स्थित गौशाला में पधारे। संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए गौशाला से संबंधित अवगति प्रस्तुत की। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया।

आज के विहार पथ के आसपास ईख, मिर्ची और हल्दी की खेती प्रचुरता लिए हुए दिखाई दे रही थी। हालांकि मार्ग के दोनों ओर इमली के वृक्ष भी बड़ी तादाद में नजर आ रही थे, किन्तु उनकी स्थिति से यह अनुमान हो रहा था कि ये वृक्ष सार-संभाल से वंचित हैं। पूज्यप्रवर लगभग १२.५ कि.मी. का विहार कर गेटपुदुर में स्थित आर.डी. इंटरनेशनल स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के शिक्षकों ने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मेत्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ।।

(मैं सभी जीवों को क्षमादान देता हूं और सारे जीव मुझे क्षमा प्रदान करें। सब प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है। किसी के भी साथ मेरा वैर नहीं है।) दिन रात में एक बार भी इस श्लोक को भावना के साथ याद कर लिया जाए तो चेतना के शुद्धिकरण की दृष्टि से यह अच्छा उपक्रम है।

दस श्रमण धर्म बताए गए हैं- उनमें एक है क्षान्ति अर्थात् क्षमा। क्षमा का अर्थ है सहिष्णुता, सहन करना। एक व्यक्ति को विवशता में सहन करना पड़ता है और एक आदमी सक्षमता में भी सहन करता है, दोनों में बड़ा अंतर है। सक्षमता की स्थिति में सहना बड़ी बात होती है।

हमारे जीवन में सहिष्णुता का विकास होना चाहिए। हमें शारीरिक सहिष्णुता-सर्दी-गर्मी, स्थान की प्रतिकूलता आदि प्रसंगों को सहन करना चाहिए। समता का अभ्यास हो जाए तो थोड़ी तकलीफ को भी सहन किया जा सकता है।'

संस्थान के चेयरमेन डी. सेंदिलकुमार ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। विद्यालय के पूर्व छात्र दीक्षार्थी आकाश एवं विद्यालय की छात्रा बालिका महक मुणोत ने अपने विद्या संस्थान में गुरु का स्वागत किया।

आराध्य के प्रथम आगमन से आह्लादित ईरोड़वासी

३ मई। यद्यपि पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार परमपूज्य आचार्यप्रवर का ईरोड़ में पदार्पण ४ मई को होना निर्णीत था, किन्तु संयोग ऐसा बना कि पूज्यप्रवर २ मई का प्रवास जहां हो रहा था, उससे ईरोड़ की दूरी मात्र दस कि.मी. रह गई। ईरोड़ के लोगों ने पूज्यप्रवर से एक दिवसीय प्रवास ईरोड़ के तेरापंथ भवन में करने की प्रार्थना की, जिसे आचार्यप्रवर ने स्वीकार कर लिया। तदनुसार आज आचार्यप्रवर ने गेटपुदुर से ईरोड़ तेरापंथ भवन की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में चिनियमपालियम के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन ओर पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मार्ग के समीप निर्मीयमाण आर.डी. कॉलेज के निकट उससे संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर से मंगलपाठ सुना।

मुख्य नियोजिकाजी आदि साध्वियां पूज्यप्रवर के कोयम्बत्तूर से प्रस्थान के पश्चात् बहिर्विहार में रहीं। आज मार्ग में उन्होंने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने वहां आसीन होकर उनका वंदन स्वीकारा।

मुख्यनियोजिकाजी ने अपनी प्रसन्नता को व्यक्त किया। तदुपरान्त साध्वियों ने गीत का संगान कर आचार्यप्रवर के चरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से ईरोड़ के श्रद्धालुओं का उल्लास चरम पर था, ऐसा हो भी क्यों नहीं, जो उनके आराध्य पहली बार उनकी कर्मभूमि में जो पधारे थे। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यप्रवर का प्रथम पदार्पण ईरोड़ के न केवल तेरापंथ समाज के लोगों को, अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज को भी प्रमुदित और प्रफुल्लित बनाए हुए था। आचार्यप्रवर के स्वागत में उमड़ी जनता के बीच सांप्रदायिक भेद विलुप्त प्रायः बना हुआ था। लगभग १० कि.मी. का विहार सम्पन्न कर आचार्यप्रवर ईरोड़ के तेरापंथ भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में दो प्रकार के छद्मस्थ प्राणी हैं- समनस्क और अमनस्क। केवली नो संज्ञी-नो अंसज्ञी होते हैं, ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से जिन प्राणियों को मन प्राप्त होता है, वे समनस्क कहलाते हैं और ज्ञानावरणीय कर्म के उदय के कारण जिन प्राणियों को मन प्राप्त नहीं होता, वे अमनस्क कहलाते हैं। केवलज्ञानी के ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम और उदय दोनों ही नहीं होते हैं, इसलिए केवलज्ञानी को न संज्ञी कहा जाना चाहिए और न असंज्ञी। उनके लिए 'नो संज्ञी-नो असंज्ञी' की संज्ञा दी गई है।

अमनस्क प्राणी अविकसित प्राणी होते हैं। समनस्क प्राणी कुछ विकसित प्राणी होते हैं। नो संज्ञी-नो असंज्ञी पूर्ण विकसित प्राणी होते हैं। जो प्राणी अमनस्क होता है, उसके ज्यादा इच्छाएं भी नहीं होती, क्योंकि उसके पास मन नहीं है। असंज्ञी प्राणी ज्यादा पाप भी नहीं कर सकता है और ज्यादा धर्म भी नहीं कर सकता। संज्ञी प्राणी ही ज्यादा पाप कर सकता है और संज्ञी प्राणी ही ज्यादा धर्म कर सकता है।

हमारा मन सुमन बन सकता है और हमारा मन दुर्मन भी बन सकता है। मन एक शक्ति है उसके उपयोग का विवेक रखना चाहिए।

मोह कर्म के वियोग से हमारे मन, वचन, काय रूपी योग शुभ रह सकते हैं और मोह कर्म के संयोग हो जाने से हमारे मन, वचन और काय रूपी योग मलिन बन जाते है। राग-द्वेष से युक्त मन दुर्मन होता है, सावद्य होता है। जब मन राग-द्वेष विप्रमुक्त होता है, तब वह सुमन बन जाता है।

'हाजरी' के संदर्भ में उपस्थित साधु-साध्वियों को विशेष रूप से संबोधित करते हुए परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'कोई हमें मर्यादा-व्यवस्था के प्रति जागरूक करे तो उसके परिष्कार की तरफ ध्यान देना चाहिए। बड़ों के अनुशासन को हितकर न मानकर बुरा मानना नकारात्मक चिंतन होता है। उसे अपने हित, कल्याण के संदर्भ में, विकास के संदर्भ में स्वीकार करना विधायक चिंतन होता है। त्रुटि बताने पर सकारात्मक और विनयपूर्ण व्यवहार का प्रयास करना चाहिए।'

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने आचार्यप्रवर के इंगितानुसार गुरुआज्ञा निष्ठा और जागरूकता के कुछ साध्वियों के प्रसंग सुनाए। मुनि अनिकेतकुमारजी और मुनि कौशलकुमारजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया।

मुख्यनियोजिकाजी ने कन्याकुमारी यात्रा के संदर्भ में पूज्यप्रवर को वर्धापित किया। साध्वियों द्वारा सामूहिक गीत का संगान किया गया। कोयम्बत्तूर से पृथक् प्रस्थान के पश्चात् पुनः पूज्यप्रवर के दर्शन करने पर मुनि अनिकेतकुमारजी ने वक्तव्य व मुनि कौशलकुमारजी ने गीत के माध्यम से अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर की कोयम्बत्तूर से ईरोड़ की यात्रा के दौरान यात्रा व्यवस्थाओं में विशेष रूप से अपनी सेवाएं देने वाले प्रवास व्यवस्था समिति- ईरोड़ के स्वागताध्यक्ष श्री नरेन्द्र नखत, श्री हनुमानमल दूगड़ और श्री भंवरलाल चौपड़ा ने पूज्य चरणों में भावांजलि अर्पित की। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने भी गीत का संगान किया।

तीन धाराओं का मिलन

४ मई। परमपूज्य अचार्यप्रवर आज प्रातः ईरोड़ के तेरापंथ भवन से ईरोड़ में ही स्थित सेंगुंदरई हायर सेंकैड्री स्कूल की ओर प्रस्थित हुए। स्थानीय मूर्तिपूजक समाज ओर स्थानकवासी समाज के अनुरोध को स्वीकार कर आचार्यप्रवर स्वागत जुलूस से पूर्व कुछ अतिरिक्त दूरी तय कर मूर्तिपूजक समाज से संबंधित स्थान में पधारे। मूर्तिपूजक समाज के युवकों ने अपनी परंपरानुसार बैंड वादन के साथ आचार्यप्रवर का स्वागत किया। आचार्यप्रवर उपाश्रय में आसीन हुए। इसी परिसर में प्रवासस्थ मूर्तिपूजक समाज के आचार्य रत्नसेन सूरीश्वरजी आदि संतों और साध्वियों का आचार्यप्रवर से मिलन हुआ। इस अवसर पर आचार्यप्रवर के सान्निध्य में संक्षिप्त कार्यक्रम की आयोजना हुई। श्री संघ ईरोड़ की तरफ से श्री रमेश बाफना ने आचार्यप्रवर के स्वागत में श्रद्धाभिव्यक्ति दी। तत्पश्चात् मूर्तिपूजक समाज के आचार्य रत्नसूरीश्वरजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। आचार्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में अहिंसा की भावना को पुष्ट करने की प्रेरणा प्रदान की तथा मूर्तिपूजक विहारचर्या के संदर्भ में इंगित प्रदान करते हुए फरमाया कि एक बात मन में आ रही है कि साधु-साध्वियों द्वारा रात्रि में विहार न किया जाए तो कैसा रहे? इस पर चिंतन किया जाना चाहिए।

आचार्यप्रवर ने उपाश्रय से स्थानक की ओर प्रस्थान किया। मूर्तिपूजक समाज के आचार्य रत्नसेनसूरीश्वरजी भी स्थानकवासी समाज के अनुरोध पर पूज्यप्रवर के साथ प्रस्थित हुए। मार्ग में आचार्यप्रवर एक अक्षम श्रद्धालु महिला को दर्शन देने उसके घर के समीप पधारे और मंगलपाठ सुनाया। अन्य अनेक परिवारों को भी अपने-अपने घरों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सुअवसर मिला।

आचार्यद्वय स्थानक में पधारे। बड़ी संख्या में उपस्थित स्थानकवासी समाज के लोगों ने दोनों आचार्यों का सादर स्वागत किया। श्वेताम्बर परंपरा की तीनों धाराओं का मिलन उपस्थित जैन समाज के लोगों को गौरव की अनुभूति करा रहा था। स्थानक में भी आचार्यद्वय के सान्निध्य में संक्षिप्त कार्यक्रम आयोजित हुआ। स्थानकवासी समाज के लोगों ने अपनी परंपरानुसार वंदन किया। तदुपरांत स्वागत में स्थानकवासी जैन संघ के अध्यक्ष श्री विशाल कोटड़िया द्वारा श्रद्धा अभिव्यक्ति दी गई।

मूर्तिपूजक समाज के आचार्य रत्नसेनसूरीश्वरजी का उद्‌बोधन हुआ। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में 'समयं गोयम मा पमायए' सूक्त का उल्लेख करते हुए सतत जागरूक रहने की प्रेरणा दी तथा निकट अतीत में मदुरै के परिपार्श्व में हुई दुर्घटना में कालकवलित मूर्तिपूजक समाज की साध्वी-द्वय के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए उनके प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की। संक्षिप्त कार्यक्रम के उपरांत आचार्यद्वय स्थानक से प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने आचार्य रत्नसेनसूरीश्वरजी के आगामी कोयम्बत्तूर चतुर्मास के संदर्भ में शुभभावना व्यक्त की। तत्पश्चात् दोनों आचार्य अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थित हुए।

पूज्यप्रवर पुनः तेरापंथ भवन के निकट पधारे। यहां से पूर्व निर्धारित समयानुसार करीब ७.३० बजे भव्य स्वागत जुलूस का प्रारंभ हुआ। अपने आराध्य के स्वागत में ईरोड़ के तेरापंथी श्रद्धालुओं का अतिशय उत्साह और उल्लास के साथ उमड़ना स्वाभाविक था, किन्तु इस जुलूस में स्थानीय स्थानकवासी, मूर्तिपूजक समाज एवं जैनेतर समाज के लोगों की संख्या और उत्साह तेरापंथ समाज से प्रतिस्पर्धा करते हुए-से प्रतीत हो रहे थे। चारों और हर्षोल्लास का वातावरण छाया हुआ था। मार्ग के परिपार्श्व में, चौराहों और मोड़ों पर खड़े लोग करबद्ध होकर पूज्यप्रवर को नमन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। कई लोग इस मनोहारी दृश्य को अपने-अपने मोबाइल के कैमरों में संजोने का प्रयत्न कर रहे थे। भुवन जैन सेवा मंडल के सदस्य अपनी परंपरानुसार अपने बैंड के साथ स्वागत जुलूस में संभागिता लिए हुए थे।

ईरोड़ के प्रतिष्ठित 'मारी अम्मन' मंदिर से संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर से मंदिर के भीतर पधारने की

प्रार्थना की, किन्तु मार्गस्थ सचित्त पानी के कारण आचार्यप्रवर ने बाहर से ही मंगलपाठ उच्चरित किया। पूज्यप्रवर मूर्तिपूजक समाज के अनुरोध पर कुंथुनाथ मंदिर के नीचे स्थित उपाश्रय में भी पधारे। वहां आसीन होकर आचार्यप्रवर ने भगवान कुंथुनाथ की स्तवना में गीत का संगान किया तथा समुपस्थित लोगों को वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। तेरापंथ भवन के समीप से प्रारंभ हुआ भव्य स्वागत जुलूस पी.आर. स्ट्रीट, पी.एस. पार्क होते हुए करीब १.५ कि.मी. की दूरी तय कर ईरोड़ में ही स्थित सेंगुंदरई हायर सेकैंड्री स्कूल में पहुंचा। पूज्यप्रवर का ईरोड़ का चार दिनों और तीन रात्रियों का प्रवास यहीं हुआ।

लक्ष्य का निर्धारण करें, फिर गति करें

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में लक्ष्य का बड़ा महत्त्व होता है। लक्ष्य विहीन दौड़ और दौड़ विहीन लक्ष्य अपर्याप्त, अपूर्ण अथवा शून्य होते हैं। आदमी को यदि पता ही नहीं होता कि कहां जाना है तो वह कहीं कैसे पहुंच पाएगा। लक्ष्य का ज्ञान हो और उस दिशा में दौड़ हो तो लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। अध्यात्म की साधना के क्षेत्र में निर्वाण/मोक्ष परम लक्ष्य होता है।

जिसके जीवन में धर्म के रूप में गति है वह व्यक्ति निर्वाण को प्राप्त हो सकता है। जो शुद्ध होता है। वह व्यक्ति धर्म कर सकता है। जो ऋजुभूत-सरल होता है, उसकी शुद्धि होती है। हमारे जीवन में सरलता का गुण होना चाहिए। छल-कपट करने वाला व्यक्ति अशुद्ध हृदय वाला होता जाता है और वह अविश्वास पात्र बन सकता है। विश्वास का आधार होता है सच्चाई। सच्चाई और सरलता का संबंध है तथा झूठ और कपट का संबंध है। धर्म की साधना में सरलता का बहुत बड़ा स्थान है। व्यवहार में भी सच्चे आदमी का मान-सम्मान हो सकता है। उसके प्रति लोगों में प्रियता का भाव भी देखने को मिल सकता है। यदि कार्य में सच्चाई है तो सबसे बड़ा लाभ होता है कि पाप कर्म से बचाव। छल-कपट करने वाला व्यक्ति पाप कर्मबन्ध कर लेता है।'

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल ईरोड़ की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। प्रवास व्यवस्था समिति- ईरोड़ के अध्यक्ष श्री हीरालाल चौपड़ा, स्वागताध्यक्ष एवं तेरापंथ सभा- ईरोड़ के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र नखत, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री हेमन्त दूगड़ और अणुव्रत जीवन विज्ञान एकेडमी की ओर से श्री सेल्वन राजन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी।

सेंगुंदरई हायर सेकैंड्री स्कूल के सचिव श्री शिवानंदन ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए ईरोड़ का चार दिवसीय प्रवास अपने विद्यालय में करने हेतु पूज्यप्रवर के प्रति आभार व्यक्त किया।

अहिंसा यात्रा प्रणेता का नागरिक अभिनंदन

५ मई। पूज्यप्रवर के ईरोड़ प्रवास का दूसरा दिन। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः प्रवास स्थल से प्रस्थान कर साध्वी किरणयशाजी के संसारपक्षीय भाई के निवास स्थान में पधारे। पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह में अभिस्नात गर्ग परिवार हर्षविभोर था। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में ईरोड़वासियों की ओर से आचार्यप्रवर के नागरिक अभिनंदन का उपक्रम रहा। कार्यक्रम के अंतर्गत महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'भारत कृषि प्रधान ही नहीं, ऋषि प्रधान देश भी है। इसीलिए भारत को ऊंची नजरों से देखा जाता है। भारत के उत्कर्ष में ऋषि-मुनियों का बहुत योगदान रहा है। दक्षिण भारत में आचार्यप्रवर का पदार्पण हुआ है। आज आचार्यप्रवर का नागरिक अभिनंदन किया जा रहा है। यह अभिनंदन किसी व्यक्ति का नहीं, ऋषि प्रधान संस्कृति का, मानवता का, अध्यात्म का अभिनंदन है। आचार्यश्री उसके माध्यम बन रहे हैं।'

इस अवसर पर साध्वीवर्याजी का भी वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अहंकार से उपरत रहने की प्रेरणा प्रदान की।

नागरिक अभिनंदन कार्यक्रम के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल-ईरोड़ द्वारा पूज्यप्रवर के अभिनंदन में गीत का संगान किया गया। स्थानीय अग्रवाल सभा के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र अग्रवाल, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री रामरतनजी कोठारी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नगर संचालक श्री डी. वेकटेश्वरन, सुंदरकाण्ड भक्त मंडल के अध्यक्ष श्री किशनलाल मेहता, जैन श्वेताम्बर संघ के सचिव श्री संतोष मेहता, स्थानकवासी जैन संघ के अध्यक्ष श्री विशाल कोटड़िया, अणुव्रत जीवन विज्ञान एकेडमी के मंत्री श्री राजेश बोथरा, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, दिगम्बर जैन संघ के अध्यक्ष श्री राजकुमार जैन, श्री पुरुषोत्तम सेठिया, कुंथुनाथ मूर्तिपूजक जैन संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाश जैन, जीतो के ईरोड़ चेप्टर के चेयरमेन श्री प्रदीप पारख, श्री ओम शांति संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री संतोष खाटेड़, स्थानकवासी संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री गौतम सालेचा, भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्र लूंकड़, प्रवास व्यवस्था समिति-ईरोड़ के स्वागताध्यक्ष एवं तेरापंथी सभा-ईरोड़ के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र नखत और तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री श्रीमती पिंकी भंसाली ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने आस्थासिक्त हृदयोद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी तथा प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री रमेश पटावरी ने किया।

६ मई। ईरोड़ प्रवास का तीसरा दिन। पूज्यप्रवर प्रातः मुनि जयकुमारजी के संसारपक्षीय भाई के निवास स्थान पर पधारे। वहां कुछ क्षण विराजकर आचार्यप्रवर ने गोठी परिवार को उपासना का अवसर प्रदान किया। आचार्यप्रवर का यह अनुग्रह परिवार को आह्लादित बनाए हुए था। वहां से प्रस्थान कर पूज्यप्रवर साध्वी धनकुमारीजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान पर पधारे। नखत परिवार आचार्यप्रवर को अपने आंगन में पाकर प्रमुदित और प्रफुल्लित दिखाई दे रहा था। ईरोड़ व्यवस्था समिति के अंतर्गत स्वागताध्यक्ष एवं यात्रा संयोजक के रूप में अपने दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने वाले श्री नरेन्द्र नखत इसी परिवार के एक प्रमुख सदस्य हैं।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में इन्द्रिय संयम की प्रेरणा प्रदान की।

शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी की स्मृति सभा

शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी का २८ अप्रेल को अनशनपूर्वक प्रयाण हो गया। आज के कार्यक्रम में उनकी स्मृति सभा का भी उपक्रम रहा।

इस अवसर पर परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी रासीसर के चोरड़िया परिवार से संबद्ध थे। विक्रम संवत २००० में करीब तेरह वर्ष की किशोरावस्था में उन्होंने परमपूज्य गुरुदेव तुलसी से मुनि दीक्षा स्वीकार की। वि.सं. २०३३ में महामना कालूगणी की जन्म शताब्दी के अवसर पर उन्हें अग्रगण्य नियुक्त किया गया। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी की विराजमानता में उन्हें शासनगौरव अलंकरण प्रदान किया गया। शासनगौरव अलंकरण प्राप्त करने वाले धर्मसंघ के विरल साधु-साध्वियों में वे एक थे। सन् १९९५ से वे प्रतिवर्ष एक माह मौन व एकान्तवास का प्रयोग किया करते थे। सन् २०१४ के गंगाशहर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मैंने उन्हें सरदारशहर में पधारने के लिए कहा था। गत लगभग ५ वर्षों से वे सरदारशहर में एकान्तवास, मौन, इन्द्रिय संयम की साधना कर रहे थे।

वि.सं. २०७६ के कार्तिक मास में उन्होंने उपवास के एकान्तर प्रारंभ किए। तत्पश्चात् मार्गशीर्ष माह में बेले-बेले तपस्या की और पौष माह में तेले-तेले तपस्या की। माघ माह में अन्न वर्जन और पानी सहित तीन द्रव्यों से ज्यादा द्रव्यों का सेवन नहीं किया। फाल्गुन माह में जल सहित दो ही द्रव्यों का सेवन किया। २२ मार्च २०१९ को उन्होंने तिविहार तपस्या के रूप में संलेखना प्रारंभ कर दी। १६ दिनों की तपस्या के पश्चात् उन्होंने

७ अप्रेल को तिविहार अनशन व महावीर जयन्ती अर्थात् १७ अप्रेल को उन्होंने चौविहार अनशन ग्रहण किया।

संथारे से पूर्व मैंने उनसे जो कहा, उसका भाव इस प्रकार है-'आप अभी जल्दी क्यों करते हो। मैं राजस्थान आऊं और आपके भी दर्शन करूं। अभी आपका शरीर सक्षम है, अभी संथारे की बात क्यों करते हो?' उनका प्रत्युत्तर प्राप्त हुआ, उसका भाव इस प्रकार है--'आचार्यश्री! आपने दर्शन की बात कही। यदि मुझे आपके दर्शन करने होंगे तो मैं अगले भव में आपके दर्शन कर सकता हूं। मेरी इच्छा है कि मैं सक्षम अवस्था में समाधि मरण का वरण करूं। आप चिंता न करें, मैं दृढ़ हूं, संथारा कर सकता हूं।' फिर मैंने भी स्वीकृति देते हुए कहा--'आप विजयश्री का वरण करो, खूब आगे बढ़ो।'

आखिर वैशाख कृष्णा नवमी तदनुसार २८ अप्रेल २०१९ को सायंकाल करीब ६.२५ बजे सरदारशहर में संलेखना संथारा सहित ३८ दिनों की तपस्या में उन्होंने इस नश्वर देह का परित्याग कर दिया। हमें संवाद मिला कि संथारे के दौरान उन्हें एक दिन आचार्य तुलसी ने दर्शन दिए।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने वर्षों पूर्व उनके लिए कहा था--'मुझे लगता है कि मुनि ताराचंदजी में तीन शक्तियां है-संकल्प शक्ति, गहरा मनोबल और संघीय भक्ति। मुनि ताराचंदजी जहां भी गए हैं, ये तीनों शक्तियां मुखर हुई हैं। उनकी संघनिष्ठा और साधना के योग से संघ की प्रभावना बढ़ी है। सचमुच ऐसे संतों पर सात्विक गर्व होता है।'

आचार्य महाप्रज्ञजी ने उनके लिए कहा--'जिस प्रकार से मुनि ताराचंदजी ने साधना, संघीय-सेवा और समर्पण से जीवन जीया है, वह वास्तव में उल्लेखनीय है।'

उन्होंने संघ में जीवन जीया, संघ में साधना की। मुझे तो यह बहुत अच्छी बात लगती है कि व्यक्ति संघ में दीक्षित होता है और अंतिम क्षण तक संघ में रहकर साधना करता है। पूज्यप्रवर ने मुनि ताराचंदजी की स्मृति में स्वरचित गीत का संगान किया। वह गीत इस प्रकार है--

तेरापथ नभ तारा तारा मुनि मनहारा जी।
धारा शुभ संथारा मानों चौथा आरा जी।
अपनी आत्मा से ही अपना होता वर कल्याण।।

निर्मल संयम पर्यव रखना ऋषिगण का कर्त्तव्य।
समणोऽहं समणोऽहं पावन पाठ सदा स्मर्तव्य।।१।।

अप्रतिबद्धविहारी रहना निर्ग्रन्थों का धर्म।
भावितचेता नर पा लेता ऐकान्तिक शिवशर्म।।२।।

इन्द्रिय विषयों का वर्जन कर ईर्या में उपयुक्त।
क्षण-क्षण आत्मिक संरक्षण से चेतन बनता मुक्त।।३।।

सच्चिन्तन हो, सज्जल्पन हो, सत्कायिक व्यापार।
द्वन्द्वात्मक स्थितियों में मन में हो समता संचार।।४।।

शासनगौरव तारामुनि की स्तुति में रत गणपाल।
'नेमांनन्दन' भैक्षवशासन नन्दनवन सुविशाल।।५।

लय-स्वामीजी रो शासन.....

मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के एक विशिष्ट संत थे। उन्होंने लंबेकाल तक धर्मशासन की सेवा की। उन्होंने दक्षिण भारत और पूर्वांचल की यात्रा भी की। मुनि सुमतिकुमारजी उनके साथ लंबे समय से थे। मुनि सुमतिकुमारजी का सिंघाड़ा हमारी ओर से उनकी परिचर्या में रखा हुआ था। मुनि सुमतिकुमारजी के

सिंघाड़े को ऐसे विशिष्ट संत के उपपात में रहने का सुंदर अवसर मिला। मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी शासनगौरव अलंकरण से अलंकृत थे। उन्होंने मौन, ध्यान, एकान्तवास आदि की विशेष साधना की। इस रूप में संलेखना-संथारा करना भी विशिष्ट बात है। वे गुरुदेव तुलसी के युग में दीक्षित हुए और उन्हें मुनिश्री नथमलजी (आचार्य महाप्रज्ञ) के साझ में रहने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे साधना में रुचि लेने वाले संत थे। उनकी व्यवहार कुशलता भी देखने को मिलती थी। वे संतों को योग-साधना का प्रशिक्षण भी दिया करते थे। ऐसे शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।'

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'कुछ-कुछ साधु-साध्वियां ऐसे होते हैं, जिनका गुरु के दिल में विशेष स्थान होता है। ऐसे साधुओं में एक थे शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी। हमने देखा कि गुरुदेव तुलसी के मन में उनके प्रति बहुत ऊंचा स्थान था। आचार्य महाप्रज्ञजी भी बहुत ऊंची निगाहों से देखते थे। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी भी उनके प्रति बहुत अहोभाव व्यक्त करते रहे हैं और आज भी हमने देखा। मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी के वैराग्य जागरण में साध्वी विरधांजी का योगदान रहा। दीक्षा के बाद उन्हें कई वर्षों तक गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में गुरुकुलवास में रहने और अध्ययन का अवसर मिला। अध्ययन के साथ-साथ उनके मन में साधना के प्रति भी सहज आकर्षण का भाव था। इसी कारण वे अपने जीवन में सुव्यवस्थित रूप में साधना के पथ पर आगे बढ़ सके। साधनाकाल में वे संघ व संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित रहते थे और संघ की प्रभावना में भी जागरूक रहते थे। इन वर्षों में मर्यादा महोत्सव के अवसर पर जब कभी उनका पधारना होता तो कभी-कभी उनसे बात करने का अवसर मिलता था। साधना के बारे में और विशेष रूप से संघ की तेजस्विता कैसे बढ़े, इस विषय में उनसे चर्चा होती थी। इसी क्रम में उन्होंने मुझे अपनी संलेखना और संथारे की तैयारी की बात भी बताई थी। उन्होंने सुनियोजित तरीके से अपनी साधना और संलेखना-संथारे के क्रम को आगे बढ़ाया। वैसे सामान्यतया उनके संयम जीवन का हर दिन साधना से अनुप्राणित रहा। उनके जीवन को जितना मैं जानती हूं, उसके आधार पर कह सकती हूं कि उन्होंने रसना विजय कर अपने शरीर को साधा, समता की साधना कर मानसिक प्रसन्नता अर्जित की और आग्रह-विग्रह से दूर रहकर उन्होंने अपनी दृष्टि को निर्मल बनाया, अपनी श्रद्धा को पुष्ट किया। उनमें आग्रह नहीं था। वे एकान्त साधना करना चाहते थे। इस संदर्भ में उन्होंने अपनी प्रार्थना गुरुदेव के सामने रखी। गुरुदेव ने फरमाया कि एकान्त निश्चय में जाने की बात मुझे कम जचती है। जीवन में निश्चय और व्यवहार दोनों का समन्वय रहना चाहिए। हम संघ में रहते हैं तो संघीय दृष्टि से कुछ कार्य करते हुए साधना करें। उन्होंने गुरुदेव की बात को सहज स्वीकार किया। इस प्रकार उनमें अनाग्रह था। ऐसे संत सहज रूप में संघ का गौरव बढ़ाने वाले होते हैं, इसलिए उन्हें शासन गौरव का सम्मान मिला।

शासन गौरव मुनिश्री ताराचंदजी ने सुव्यवस्थित सुनियोजित रूप में साधना, संलेखना-संथारा कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनका जीवन सबके लिए प्रेरणा है। परम पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में यही मंगलकामना करती हूं कि उनकी आत्मा वीतरागता की दिशा में बढ़ती रहे और वे जहां कहीं हैं धर्मसंघ में साधना की प्रेरणा संप्रेषित करते रहें।'

मुख्यनियोजिका जी ने कहा--' शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी ने समाधिपूर्वक मृत्यु को प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बनाया। उन्होंने सक्षम अवस्था में जीवन की योजना बनाई और उस योजना के अनुरूप उन्होंने जीवन के अंतिम पांच वर्ष विशेष साधना में बिताए। वे एक साधक थे। वे कहते थे-'आचार्य महाप्रज्ञजी ने मुझमें साधना के प्रति आकर्षण पैदा किया है। मुझे आचार्यश्री ने साधना के अनेक गुर सिखाए हैं। उन्होंने जिस मार्ग का वरण किया, वह हम सबके लिए आदेय है। मैं यह मंगलकामना करती हूं कि उनकी आत्मा उत्तरोत्तर ऊर्ध्वारोहण करती रहे।'

साध्वीवर्याजी ने कहा--'मुझे शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी के दर्शन करने का अवसर तो मिला, किन्तु कभी उनकी सेवा का अवसर नहीं मिला। उनका नाम तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित हो गया है।

मैंने जितना जाना, वे एक निर्मल व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने कर्तृत्व, व्यक्तित्व और साधना से शासन के गौरव को बढ़ाया। उनके जीवन से साधना के द्वारा लक्षित मंजिल को प्राप्त करने का पथदर्शन मिलता है। उन्हें तीन-तीन आचार्यों की विशेष कृपा प्राप्त हुई। मैंने अनुभव किया कि उनमें दृढ संकल्प शक्ति, प्रबल मनोबल और गहरी संघभक्ति थी। इसी कारण उनके जीवन को आदर्श कहा जा सकता है। वे एक ऐसे साधक थे, जिन्हें देखकर आचार्य स्वयं प्रसन्न होते थे। मैं ऐसे महान साधक संत के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।'

मुख्यमुनिश्री ने कहा--'मुनिश्री ताराचंदजी का जीवन विशिष्ट था। वे हमारे धर्मसंघ के शासनगौरव और विशिष्ट साधक संत थे। उनका जीवन प्रायोगिक जीवन था। उन्होंने अपने जीवन में मौन, ध्यान, खाद्य संयम आदि के विविध प्रयोग किए। उन्होंने अप्रमत्तता की विशिष्ट साधना की। वे हर क्षण जागरूक रहने का प्रयास करते थे। उन्होंने अपने जीवन में कषाय मुक्ति की साधना की। उनका जीवन स्वावलंबी था। उन्होंने मानों एक संदेश दिया कि संघ में रहकर ही विशिष्ट साधना की जा सकती है। उनका मेरे प्रति भी विशेष वत्सलता का भाव रहता था। ऐसे महान साधक की आत्मा शीघ्रातिशीघ्र मोक्षश्री का वरण करे, यही मंगलकामना करता हूं।'

स्मृति सभा के अंतर्गत तेरापंथी सभा-सरदारशहर के मंत्री श्री सिद्धार्थ चिंडालियां, श्री मुन्नालाल सेठिया, श्री पुखराज डागा, श्री बच्छराज नौलखा तथा श्रीमती संगीतादेवी श्यामसुखा ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। समयाभाव के कारण कई इच्छुक साधु-साध्वियां स्मृति सभा में अपनी प्रस्तुति नहीं दे पाए, उन्हें आचार्यप्रवर ने १० मई के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में प्रस्तुति का अवसर प्रदान किया। विस्तृत रिपोर्ट पढें, आगामी विज्ञप्ति में।

• वर्ष २४ विज्ञप्ति अंक ४७ में पृष्ठ ११-१२ पर 'भिन्न सामाचारी में वाहन प्रयोग का प्रायश्चित' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित सूची में क्रंमाक २३ के बाद 'साध्वी लावण्यप्रभाजी १६०० (चारभुजा) एक मासिक छेद' का प्रायश्चित भी पढा जाए।

नवीन घोषित चतुर्मास

१. साध्वी संयमप्रभाजी (हांसी)	धूरी
२. मुनि रणजीतकुमारजी (राजलदेसर)	चिकमंगलूरु
३. मुनि सुमतिकुमारजी (गंगाशहर)	गंगाशहर

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

•

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला